बड़े बाबा का श्री निलय में स्वागत

गुरुवार, २० सितम्बर २०१८

स्वामी ईश्वरानन्द

द्वारा सुनाया गया अनुभव

यह अनुभव, २० सितम्बर, २०१८ को श्री मुक्तानन्द आश्रम में भगवान नित्यानन्द की मूर्ति की पुनर्स्थापना महोत्सव के दौरान सुनाया गया था।

भगवान नित्यानन्द को नमन!

सुस्वागतम् बड़े बाबा!

यहाँ श्री निलय में आपके दिव्य दर्शन पाकर हम सभी बहुत प्रसन्न हैं।

हे भगवान नित्यानन्द, हम आपसे प्रेम करते हैं और अपने हृदय से आपको बारम्बार प्रणाम करते हैं।

आज, गुरुवार, २० सितम्बर, २०१८ को हम सत्संग के लिए एकत्र हुए हैं जिससे हम आपकी इस नवीन पूजा-वेदी पर आपके आगमन का महोत्सव मना सकें जहाँ हम रोज़ अपको नमन करेंगे और आपकी पूजा करेंगे।

इस प्रकार, इस शुभ दिवस पर हम वर्ष २०१८ के लिए श्रीगुरुमाई के सन्देश, 'सत्संग' का अभ्यास कर रहे हैं। 'सत्संग' यानि सत्य की संगति। सन्तों व भक्तों की संगति। सर्वश्रेष्ठ संगति।
कल सुबह, मैं आत्मनिधि में उस स्थान पर गया जहाँ पूर्व में बड़े बाबा की मूर्ति प्रतिष्ठित थी। उस स्थान के खुलते ही मैं वहाँ पहुँच गया। मैंने बड़े बाबा को प्रणाम किया और उनसे प्रार्थना की :

“इतने वर्षों तक यहाँ रहने के लिए धन्यवाद, बड़े बाबा जी।” अपने अन्तर में मैंने उनके ये शब्द सुने, वे प्रसन्नतापूर्वक मुझसे कह रहे थे : “कल से, मैं तुम सबके साथ श्री निलय में रहूँगा।”

जब मैंने इन वचनों को सुना तो मैं मुस्कराया, इन शब्दों ने मेरे हृदय को छू लिया था।
मैं बड़े बाबा के शब्दों पर मनन करने लगा। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि बड़े बाबा सचमुच हम सबके साथ यहाँ सत्संग में रहना चाहते हैं। सन्तों को ऐसे भक्तों की संगति बहुत प्रिय होती है जो सत्य को जानने और उसे जीने के लिए समर्पित होते हैं।

श्री निलय, यह पवित्र हॉल, वह स्थान है जहाँ हम सत्संग के लिए एकत्रित होते हैं, जहाँ पर गुरुमाई जी सिद्धयोग की सिखावनियाँ प्रदान करती हैं और जिन्हें समस्त विश्व में पहुँचाया जाता हैं। यही वह पवित्र हॉल है जहाँ हम प्रतिदिन श्रीगुरुगीता का पाठ करते हैं और श्रीगुरु की पूजा करते हैं। यहाँ श्री निलय में हम दिव्य नाम का संकीर्तन करते हैं और आत्मा पर ध्यान करते हैं।

मुझे जो अनुभव हुआ उससे यह प्रतीत होता है कि यही वह स्थान है जहाँ बड़े बाबा, ‘महायोगी’ रहना चाहते हैं, ऐसे स्थान पर जहाँ उन्हें प्रेम करने वाले साधक अपने आध्यात्मिक अभ्यास करते हैं।

बड़े बाबा की मूर्ति दिव्य शक्ति से अनुप्राणित है। प्रत्येक दिन जब हम अपने आध्यात्मिक अभ्यासों को करने के लिए इस हॉल में प्रवेश करेंगे तो बड़े बाबा की मंगलमय मुख-मुद्रा हमें सिद्धयोग साधना के लक्ष्य का स्मरण कराने के लिए, यहाँ पर उपस्थित होगी। इस अनुभव से विश्वभर के सभी सिद्धयोगी भली भाँति परिचित हैं क्योंकि जब वे सिद्धयोग आश्रमों, ध्यान केन्द्रों, संकीर्तन एवं ध्यान केन्द्रों व अपने घर पर सजी पूजा में गहन भक्ति-भाव से उनकी पूजा करते हैं तो यही अनुभव करते हैं। बड़े बाबा रोज़ कई हज़ारों लोगों के हृदय को प्रकाशित करते हैं और वे युगों तक, ऐसा करते रहेंगे।

उदाहरण के लिए, सिडनी के सिद्धयोग आश्रम में, महीने में एक बार पूरा संघम् एकत्र होकर बड़े बाबा की एक छोटी मूर्ति का अभिषेक व पूजा करता है।

एक सिद्धयोग विद्यार्थी लिखते हैं :

> यह मूर्ति केवल आठ इंच लम्बी है, फिर भी संघम् में सभी उस मूर्ति द्वारा बड़े बाबा जी के अथाह प्रेम व श्रद्धा को अनुभव करते हैं।
>
> हर सत्संग के समापन पर लोग, पंक्तिबद्ध होकर खड़े होते हैं ताकि क्षणभर के लिए बड़े बाबा के साथ अन्तर में मौन रूप से जुड़ सकें। कृतज्ञता व कृपा का यह वातावरण स्पर्शनीय होता है जिसे स्पष्टरूप से महसूस किया जा सकता है। लोग इन आशीर्वादों को अपने दैनिक जीवन में ले जाते हैं और इन्हें दूसरों के साथ बाँटते हैं।

एक भक्त जो एक सुदूर गाँव में रहती हैं और हर रोज़ अपने घर में भगवान नित्यानन्द की पूजा करती हैं, वे लिखती हैं :

> मैं हर सुबह बड़े बाबा के दर्शन करती हूँ। मैं नित्यानन्द आरती करती हूँ और उनकी मूर्ति के समक्ष पुष्प अर्पित करती हूँ। मैं उनसे बात करती हूँ। मेरे पास उनके लिए बहुत सुन्दर-सुन्दर वस्त्र हैं, और मैंने उन्हें एक माला पहनाई है जो बाबा जी ने मुझे दी थी। शक्तिपात ध्यान-शिविर या महोत्सव पर बड़े बाबा विशेष आसन पर बैठते हैं जो मैं उन अवसरों के लिए संभाल कर रखती हूँ।

कई सिद्धयोगी बड़े बाबा के दर्शन करने व उनसे सिखावनियाँ प्राप्त करने के लिए हर रोज़ सिद्धयोग पथ की वेबसाइट भी देखते हैं।

जब कोई बड़े बाबा के स्वरूप की आराधना करता है व उनके स्वरूप का ध्यान करता है तो उनकी कृपा द्वारा उसे 'सत्संग' अर्थात् सत्य की संगति में होने का अनुभव हो सकता है।

बड़े बाबा एक जन्मसिद्ध थे यानि ऐसे महात्मा जो योगपूर्ण हैं, जिनका जन्म, योग में पूर्णत्व की स्थिति के साथ हुआ हो।

बहुत कम उम्र से ही बड़े बाबा ने अपनी आत्मज्ञान की स्थिति को प्रकट कर दिया था। वे अपने असंख्य चमत्कारों के लिए प्रसिद्ध थे। इन चमत्कारों द्वारा उन्होंने लोगों का उत्थान किया, उनकी प्रार्थनाओं के उत्तर दिए, और उन्हें भगवान तक पहुँचने का मार्ग दिखाया।

बड़े बाबा के एक भक्त यह कहानी सुनाते हैं।

> मेरे पिता जी जो एक किसान थे, वे एक सुबह खेत में हल जोत रहे थे तब उनकी नज़र खेत में निश्चल अवस्था में लेटे हुए एक युवा व्यक्ति पर पड़ी। मेरे पिता जी उनके समीप गए, यह देखने के लिए कि उनकी सांस चल रही है या नहीं। उनकी सांस तो चल रही थी परन्तु बहुत धीमे, और ऐसा लग रहा था कि वे समाधि की स्थिति में हैं। उनके चेहरे पर एक सुन्दर मुस्कान थी। मेरे पिता जी ने सोचा कि यह अवश्य ही कोई पुण्य आत्मा होंगे और वे चुपचाप वहाँ से चले गए।
>
> अगली सुबह भी वे युवा व्यक्ति वहीं पर थे। मेरे पिता जी की उत्सुकता बढ़ गई, किन्तु उन्होंने उस युवक को वहीं रहने दिया।
>
> तीसरी सुबह जब मेरे पिता जी वहाँ पर वापस गए तो वे युवा व्यक्ति अभी भी उसी स्थान पर लेटे हुए थे। अब मेरे पिता जी को चिन्ता हो गई कि कहीं उन्हें कुछ हो तो नहीं गया। वे उनके पास गए और हल्के-से उन्हें हिलाया। उन्होंने धीरे-से अपनी आँखें खोली। मेरे पिता जी ने कहा, “कृपया मेरे घर चलकर, कुछ भोजन ग्रहण कर लें।”
>
> उन्होंने मुस्कराते हुए मेरे पिता जी की तरफ़ देखा, और फ़िर उठकर उनके साथ घर की ओर चल दिए।
>
> वे हमारे घर पर कुछ दिन रहे, और फिर अचानक एक दिन चले गए। वे अपने पीछे शान्ति का एक ऐसा वातावरण छोड़ गए जिसे हर किसी ने महसूस किया।

मेरे पिता जी के निधन के कई वर्षों बाद, मैंने एक महान व्यक्ति के बारे में सुना जिनका नाम था, भगवान नित्यानन्द और वे गणेशपुरी गाँव में निवास कर रहे थे। मैं उनके दर्शन के लिए गया।

मैं बहुत शान्ति से भगवान के सम्मुख गया। जब उन्होंने मुझे देखा तो उन्होंने मेरे हाथ पकड़ लिए और शॉल, माला, फूलों आदि उपहारों की झड़ी लगा दी। वे बोले, "तुम्हारे पिता मेरे प्रति बहुत दयालु थे।"

कितना विस्मयकारी! उस घटना के समय तो मेरा जन्म भी नहीं हुआ था। वे मुझे कैसे जानते थे?

वे सब कुछ जानते हैं।

बड़े बाबा के लिए कुछ भी अचेतन नहीं था; समस्त ब्रह्माण्ड, चिति शक्ति से परिपूर्ण था। यह उनकी परादृष्टि थी, और उनमें यह असाधारण शक्ति थी कि वे शक्तिपात-दीक्षा द्वारा इस ऐक्य की परादृष्टि को दूसरों में जाग्रत कर सकते थे।

बाबा मुक्तानन्द को दिव्य-दीक्षा प्रदान कर और उन्हें विश्वभर में दिव्य-दीक्षा उपलब्ध कराने का आदेश प्रदान कर, बड़े बाबा ने सिद्धयोग पथ की आधारशिला रखी जिससे यह पथ असंख्य साधकों के लिए ज्ञान व आन्तरिक रूपान्तरण का स्रोत बन गया। बड़े बाबा ही सिद्धयोग परम्परा से प्रवाहित होने वाली कृपा की गंगा को इस विश्व में लेकर आए।

यद्यपि वे सर्वत्र विद्यमान हैं परन्तु जब आप उनकी मूर्ति के सम्मुख आते हैं तो आप उनके अहैतुक प्रेम को महसूस कर पाते हैं। आप भगवान की महान शक्ति के साथ जुड़ पाते हैं। बड़े बाबा की छवि ही परब्रह्म का प्रकट स्वरूप है। उनकी सुन्दर मुख-मुद्रा हमारे अन्तर में सत्संग का आवाहन करती है।

एक ब्राह्मण पुजारी बड़े बाबा के साथ हुआ अपना अनुभव बताते हैं।

एक युवा ब्राह्मण पुजारी के रूप में मेरा सबसे पहला कार्य होता था यहाँ पालनी में श्रीकृष्ण मन्दिर की देखरेख करना। एक दिन सुबह, मैं पूजा सम्पन्न करके मन्दिर से बाहर आ ही रहा था कि मैंने एक अनजान व्यक्ति को केवल एक लंगोटी पहने हुए मन्दिर की ओर आते देखा।

उस व्यक्ति ने मेरे पास आकर कहा, "कृपया मन्दिर खोल दें। मैं आरती करना चाहता हूँ।"

मैंने उसकी ओर देखा और सोचा, "ये अपने आप को समझता क्या है?" मैं उसे अनसुना कर चलता रहा। परन्तु मैं कुछ ही कदम चला था तभी मुझे मन्दिर की घंटियों के बजने की आवाज़ सुनाई दी। मैं पीछे मुड़ा। और वह व्यक्ति तो मन्दिर के भीतर पहुँच चुका था!

मैं दौड़कर वापस आया और देखा कि मन्दिर के गर्भगृह के कपाट पूरे खुले थे। और मन्दिर के देवता, भगवान कृष्ण के स्थान पर यह व्यक्ति बैठा था। और इतना ही नहीं, उनके समक्ष एक ज्योत घूम रही थी और अदृश्य हाथ उनकी आरती कर रहे थे।

क्या आप जानना चाहते हैं कि मैंने क्या किया? मैंने साष्टांग प्रणाम किया।

फिर वे बाहर आए और मन्दिर के सामने आकर खड़े हो गए। वे अपने एक पैर पर वृक्षासन में खड़े हो गए और उनकी आँखें उनके सिर के पीछे की ओर घूम गईं।

और फिर, न जाने कहाँ से लोग दौड़ते हुए आने लगे और उनके चरणों में पैसे चढ़ाने लगे। उन्होंने उन लोगों से कहा कि वे वहाँ के स्थानीय संन्यासियों के मुखिया या स्वामी को बुलाएँ। और फिर उन्होंने उस स्वामी से उन पैसों को इकट्ठे कर लेने को कहा। उसके बाद वे बहुत तेज़ी से वहाँ से चले गए।

उस स्वामी ने मुझे बताया कि वह मन्दिर के देवता से प्रार्थना करता आ रहा था, क्योंकि उसके और अन्य स्वामियों के पास पर्याप्त भोजन नहीं था और वे भूखे रह रहे थे। वह भगवान कृष्ण से प्रार्थना कर रहा था कि उन्हें दिन में कम से कम एक बार तो भोजन मिल जाए। और भगवान नित्यानन्द ने उसकी प्रार्थना सुन ली।

और, आज भी ऐसे छोटे-बड़े चमत्कार होते रहते हैं।

एक सुन्दर प्रार्थना, श्रीअवधूतस्तोत्रम् में बड़े बाबा की अन्तर-स्थिति का वर्णन करते हुए उनका गुणगान किया गया है :

> सभी योगों से पूर्ण, साक्षात् तप की मूर्ति, प्रेममय, जिनका दर्शन आनन्ददायक है, ऐसे ज्ञान से पूर्ण, साक्षात् कृपा के अवतार नित्यानन्द भगवान को मैं नमस्कार करता हूँ।[१]

जब आप इस श्लोक को सुनते हैं, तो आपको ऐसा नहीं लगता कि ये आपके परम प्रिय बड़े बाबा ही हैं?

कितना कृपापूर्ण दिन है। हम यहाँ पर 'सत्संग' में हैं और हमारे चारों ओर महान सिद्ध हैं।

धन्यवाद बड़े बाबा, अपने अति सुन्दर व प्रेममय स्वरूप के साथ हम पर कृपा करने के लिए।

श्री निलय में आपका स्वागत करते हुए हमें बहुत-बहुत खुशी हो रही है!

हम आपको अपनी आराधना और अपना प्रणाम अर्पित करते हैं।

और इन शब्दों के साथ आपकी जय-जयकार करते हैं :

सद्गुरुनाथ महाराज की जय!
सद्गुरुनाथ महाराज की जय!
सद्गुरुनाथ महाराज की जय!

[१] श्रीअवधूतस्तोत्रम्, श्लोक १६, स्वाध्याय सुधा में से [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स, २०१६], पृष्ठ, २०१

©२०१८ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।